بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-03.05.2024 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हमरुल असद एंव ओहद नामक युद्ध के हवाले से आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन परिचय का वर्णन तथा दुनिया के हालात और हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाह् तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के स्वास्थ्य के लिए दुआ की तहरीक।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 03 मई 2024. स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हमरुल असद नामक युद्ध का वर्णन हो रहा था इसके अंतर्गत हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने ओहद की लड़ाई से मदीना वापसी तथा हमरुल असद की लड़ाई का जो वर्णन किया है, वह बयान करता हूँ। आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि ओहद के युद्ध से वापस लौटन वालो रात एक अति भयावह रात थी। क्यूँकि बावजूद इसके कि क़ुरैश की सेना ने प्रत्यक्षतः मक्का की राह ली थी किन्तु आशंका थी कि उनकी यह योजना मुसलमानों को निश्चिंत करने के उद्देश्य से न हो। अतएव उस रात मदीने में पहरा देने का प्रबन्ध किया गया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मकान का भी सहाबियों रज़ी. ने विशेष रूप से पहरा दिया। सवेरा हुआ तो पता चला कि यह आशंका केवल एक भ्रम नहीं थी क्यूँकि फ़ज्र से पहले आप स. को यह सूचना मिली कि क़ुरैश की सेना मदीने से कुछ मील दूर जाकर ठहर गई है तथा क़ुरैश के सरदारों में वाद विवाद जारी है कि न तुमने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हत्या की, न मुसलमान महिलाओं को सेविकाएँ बनाया, न उनकी सम्पत्ति पर क़बज़ा किया, बल्कि जब तुम उन पर ग़ालिब आए तो तुम उनको ऐसे हो छोड़ कर चले आए ताकि वे दोबारा शक्ति पकड़ लें। अतः अब भी अवसर है कि वापस चलो तथा मदीने पर हमला करके मुसलमानों की जड़ काट दो। इसके विपरीत दूसरे कहते थे कि तुम्हें एक विजय मिल गई है उसे पर्याप्त मानो तथा वापस चलो, ऐसा न हो कि यह विजय भी पराज्य में बदल जाए। आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब यह सूचना मिली तो तुरन्त रवानगी की

घोषण करवाई तथा साथ ही यह निर्देश दिया कि ओहद पर जाने वालों के अतिरिक्त कोई अन्य हमारे साथ न निकले। ओहद के मुजाहिद अपने घावों को बाँध कर अपने आक़ा के साथ चल पड़े। आठ मील की दूरी पार करके आप स. हमरुल असद पहुंचे, यहाँ आपने आग जलाने का आदेश दिया। अतएव पाँच सौ आगें तुरन्त रौशन हो गईं। यहीं मअबद नामक मुशरिक सरदार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिला तथा आगे जाकर उसने अपनी बातों से अबू सुफ़यान तथा क़ुरैश के अन्य सरदारों के साहस दुर्बल किए। मअबद की बातों का ऐसा रौब पड़ा कि उन्होंने मदीने की ओर चढ़ाई का निश्चय छोड़ दिया तथा मक्का की ओर लौट गए।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमरुल असद में दो तीन दिन विश्राम किया तथा पाँच दिन की अनुपस्थिति के बाद मदीने वापस तशरीफ़ ले आए। ओहद की लड़ाई के परिणाम के विषय पर बड़ी लम्बी आलोचनाएँ की गई हैं। कुछ सीरत के लेखक इसे पराज्य बताते हैं, कुछ इसे पराज्य कहने से बचते हैं तथा अपना मत समानान्तर रखना चाहते हैं। परन्तु कुछ ऐसे भी हैं जो इसे पराज्य के बाद विजय बतलाते हैं। वास्तविकता यह है कि उस समय के युद्धों की प्रथा एवं नियमों के अनुसार इसे पराज्य नहीं कहा जा सकता, क्यूँकि मुसलमान तो उस समय भी मैदान में मौजूद थे जब अबू सुफ़यान केवल नारे लगाता हुआ मैदान से रवाना हो गया था। अब् सुफ़यान ने यह खोखला नारा भी लगाया था कि आज का दिन बदर के बदले का दिन है, जबकि यह बदर का बदला कैसे हो गया? बदर में तो मुसलमानों ने काफ़िरों के बड़े बड़े सरदार मार गिराए थे, उन्हें माले ग़नीमत मिला था, काफ़िरों के सत्तर लोग बन्दी बनाए गए थे। इसी तरह बदर में मुसलमान विजयी होकर, रिवायतों के अनुसार तीन दिन तक ठहरे रहे थे। जबकि ओहद के दिन काफ़िरों को इनमें से कोई एक बात भी प्राप्त न हो सकी तो भला यह बदर का बदला कैसे हुआ। हाँ, ओहद में पहले चरण में विजय के बाद दूसरे चरण में मुसलमानों को बड़ी जान की हाानि का सामना करना पड़ा।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन साहब रज़ी. बयान करते हैं कि निरन्तर परिणामों की दृष्टि से तो ओहद की लड़ाई बदर के युद्ध की तुलना में कोई विशेष महत्त्व नहीं रखती परन्तु उस समय की स्थिति के अनुसार इस युद्ध ने मुसलमानों को अवश्य हानि पहुंचाई। पहली बात यह है कि मुसलमानों के सत्तर आदमी शहीद हुए जिनमें कुछ प्रतिष्ठित सहाबा रज़ी. भी शामिल हैं तथा ज़ख़मियों की संख्या तो अत्यधिक थी। दूसरी बात यह है कि मदीने के यहूदी तथा मुनाफ़िक़ जो बदर के युद्ध के परिणाम स्वरूप रौब में आ गए थे, अब कुछ दलेर हो गए। तीसरा यह कि मक्का के काफ़िरों का साहस बढ़ गया तथा उन्होंने अपने दिल में यह समझ लिया कि हमने न केवल बदर का बदला उतार लिया है बल्कि आगे भी जब कभी जत्था बना कर हमला करेंगे तो मुसलमानों को अपने आधीन कर सकेंगे। चौथी बात यह हुई कि साधारण क़बीलों ने भी ओहद के बाद अधिक साहस के साथ सिर उठाना शुरु कर दिया। परन्तु इन बातों के बावजूद यह एक स्पष्ट वास्तविकता है कि जो हानि क़ुरैश को बदर के युद्ध ने पहुंचाई थी, ओहद की विजय उसका बदला पूरा नहीं कर सकती।

ओदह के युद्ध की हानि एक दृष्टि से मुसलमानों के लिए लाभदायक साबित हुई क्यूँकि उन पर यह बात उज्जवल दिन की भांति प्रकट हो गई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इच्छा एवं

हिदायत के विरुद्ध एक पग भी आगे बढ़ना कभी भी लाभदायक एवं कल्याणकारी नहीं हो सकता। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीने में ठहरने के पक्ष म अपना मत दिया तथा इस संदर्भ में अपना एक सपना भी सुनाया परन्तु लोग बाहर निकल कर लड़ने के लिए आतुर थे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें ओहद के एक संकीर्ण रास्ते पर नियुक्त फ़रमाया तथा अत्यधिक सावधानी रखने का निर्देश दिया कि इस स्थान को न छोड़ना, किन्तु उन्होंने माले ग़नीमत के विचार से इस स्थान को ख़ाली छोड़ दिया। अतः ओहद में हारना यदि एक दृष्टि से कष्ट का कारण थी तो दूसरे आयाम से वह मुसलमानों के लिए एक लाभप्रद पाठ बन गई।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह. ने एक सम्बोधन में ओहद की लड़ाई के बाद की घटनाओं का जो विश्लषण किया है, उसके कुछ बिन्दु हैं- 1- मुसलमानों में से पराजित होने की भावना को पूर्णतः मिटाने के लिए इससे अच्छी योजना सम्भव न थी। 2- नव उत्साहित युवाआं तथा नए मुजाहिदों को साथ न चलने की अनुमति न देकर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूर्ण रूप से यह साबित कर दिया कि आप स. का वास्तविक भरोसा अपने रब पर ही है। 3- आप स. ने अपने उन सहाबियों को दिलदारो फरमाइ जिनके पाँव ओहद के मैदान में उखड़ गए थे तथा उन पर सम्पूर्ण भरोसा करने की अभिव्यक्ति फ़रमाई। 4- आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह शतप्रतिशत भरोसा करना कोई भावनात्मक निर्णय नहीं था बल्कि मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ओहद के अगले दिन ही शत्रु का पीछा करने का निर्णय अपन साथियों पर ऐसा महामान्य उपकार है कि कभी किसी सेनापति ने अपनी सेना पर नहीं किया कि उनकी ज़ख़मी भूमिका को एक पल में ऐसा सम्पूर्ण उपचार प्रदान किया हो। اللھم صلی علیٰ محمد وعلیٰ اٰل محمد وبارك وسلم انك حمید مجید 5- बाद की घटनाओं से साबित है कि आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह क़दम केवल मानसिक उपचार तथा नैतिक नहीं था बल्कि सैन्य कुशलता की दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्व पूर्ण साबित हुआ। आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने केवल अपने विवेक एंव युक्ति के माध्यम से अनेक महामान्य लाभ प्राप्त किए। आप रह. फ़रमाते हैं कि निःसन्देह नबवी युद्धों पर दृष्टि डालने से आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्दर, अद्वित्तीय प्रतिभाओं पर भी अदभुत रोशनी पड़ती है परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अव्व्ल व आख़िर पात्रता एक कुशल यौद्धा की नहीं बल्कि एक नैतिक एवं आध्यात्मिक सरदार की थी जिसक हाथ में नैतिक कर्मों का झंडा थमाया गया था। उच्चतम नैतिक आचरण का झंडा बुलन्द रखने वाल तथा और अधिक ऊँचा करते चले जाने के जिस महान संघर्ष में आप स. व्यस्त थे, वह कभी न समाप्त होने वाला ऐसा संघर्ष था जो शांति की अवस्था में उसी तरह जारी रहा जैसे युद्ध की अवस्था में।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि ओहद का युद्ध मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई का एक महान निशान था। इस युद्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार पहले मुसलमानों को सफलता मिली, फिर आप स. के प्रिय चाचा लड़ाई में मारे गए। फिर हमले के आरम्भ में काफ़िरों का झंडा वाहक मारा गया, फिर आप स. की पेशगोई ही के अनुसार

आप स. स्वयं भी ज़ख़मी हुए तथा अनेक सहाबी शहीद हुए। इसके अतिरिक्त मुसलमानों को ऐसे शिष्टाचार एवं ईमान को प्रकट करने का अवसर मिला जिसका उदाहरण इतिहास में और कहीं नहीं मिलता।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि आहद के युद्ध के तुरन्त बाद हान वाल हमरुल असद नामक युद्ध का बयान यहाँ समाप्त होता है।

हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाह ने फ़रमाया कि दुनिया के हालात, मुसलमानों की हालत तथा फ़लिस्तीन के बारे में दुआओं की ओर मैं ध्यान दिलाता रहता हूँ। यद्यपि प्रत्यक्षतः कुछ वर्गों की ओर से यह व्यक्त किया जा रहा है कि युद्ध विराम कुछ अवधि के लिए हो जाए परन्तु जो स्थिति दिखाई दे रही है उससे लगता है कि यदि हो भी जाए तो तब भी अल्लाह फ़लिस्तीन को भी सामर्थ्य दे और वे भी अल्लाह तआला की ओर झुकें। अतएव अब लग रहा है कि इन परिस्थितियों में अल्लाह तआला ने इन अहंकारियों के अहंकार को तोड़ने की भी व्यवस्था कर दी है। यह काम कब सम्पूर्ण रूप में होता है, यह अल्लाह बेहतर जानता है परन्तु यह घमंड जो है वह इनका अब टूटना शुरु हो गया है। इनके अन्दर से ही इनके विरोधी पैदा होना शुरु हो गए हैं। अमरीका में भी आन्दोलन हो रहे हैं। अब शक्ति को उपयोग में ला रहे हैं कि आन्दोलन बन्द करें परन्तु फिर भी ये चिंगारियाँ भड़केंगी, अस्थाई रूप में रुकेंगी भी, तो फिर भड़क जाएँगी। अल्लाह तआला दुनिया की बड़ी शक्तियों को बुद्धि प्रदान करे कि वे न्याय से काम लें। अपने लिए और नियम हैं इनके, तथा दूसरों के लिए और। यही चीज़ जो है फिर एक समय पर आकर यू.एन. के टूटने का भी कारण बन जाएगी।

ख़ुत्बः के अन्त में सय्यदना अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने स्वास्थय के विषय में जमाअत के दोस्तों को स्नेह पूर्ण अवगत करते हुए फ़रमाया कि दूसरी दुआ जिसके लिए मैं आज कहना चाहता हूँ, वह अपने लिए है। एक लम्बे समय से मुझे दिल के वाल्व की कठिनाई थी, डाक्टर्ज़ प्रोसीजर कहा करते थे परन्तु मैं टालता रहा था। अब डाक्टरों ने कहा कि ऐसी स्टेज आ गई है कि और अधिक प्रतीक्षा उचित नहीं। अतएव उनके कहने पर पिछले दिनों वाल्व को बदलने का प्रोसीजर हुआ है। अलहम्दुलिल्लाह ठीक हो गया और इस लिए म कुछ दिन डाक्टरों की हिदायत के अनुसार मस्जिद भी नहीं आ सका। डाक्टर कहते हैं कि मेडिकली अब जो प्रोसीजर होना था, वह अल्लाह को फज्ल स सफल हआ ह, दआ कर कि अल्लाह तआला न जितना भो जोवन दना ह, सक्रिय जोवन प्रदान कर, आमोन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131